दिगन्तर विद्यालय में आकलन

समझ और तरीके

निशी

हमारी स्कूली शिक्षा व्यवस्था में आकलन लम्बे अरसे से बहस का मुद्दा बना हुआ है। मुख्यधारा शिक्षा व्यवस्था में आकलन के तरीके के रूप में 'परीक्षा' का एकछत्र प्रभुत्व रहा है। पिछले कई दशकों में परीक्षा प्रणाली की कमियों पर बहस और गंभीर आलोचनाओं के बावजूद इसमें बदलाव नहीं आया। 70 के दशक में कोठारी आयोग ने बच्चों के स्तर को सुधारने में मदद करने हेतु आकलन को एक सतत प्रक्रिया के रूप में प्रस्तावित किया। इसके बावजूद परिस्थितियों में कोई सुधार नहीं हुआ और परीक्षा में आए नम्बरों से ही बच्चों के सीखने का मूल्यांकन और उसे आगे की कक्षा में भेजे जाने का निर्णय लिया जाता रहा। नब्बे के दशक में यशपाल समिति ने बस्ते के बढ़ते बोझ पर चिंता जताते हुए परीक्षाओं के स्वरूप में बदलाव की सिफारिश यह रेखांकित करते हुए की कि 'परीक्षा प्रणाली बच्चों की रटकर शब्दशः लिख देने की क्षमता पर जोर देती है। परिणामस्वरूप शिक्षक एवं अभिभावक बच्चे पर परीक्षा का अनावश्यक दबाव डालते हैं और यह बच्चों पर नकारात्मक प्रभाव डालता है।' परन्तु यह भी नहीं कहा जा सकता है कि पूरी शिक्षा व्यवस्था में 'आकलन' को लेकर एक जैसी ही चीजें चल रही थीं। वैकल्पिक सोच के साथ आरंभ किए गए चुनिन्दा स्कूलों में शिक्षण प्रक्रियाओं और आकलन पर एक फर्क नजरिए को अपनाया गया। इन्हीं चुनिन्दा स्कूलों में से एक था डेविड ऑसबरा का नीलबाग स्कूल। ऑसबरा ने 70 के दशक में मूल्यांकन को 'घनचक्कर की पहेली' कहते हुए परंपरागत आकलन की आलोचना की। उनके अनुसार, ''मूल्यांकन अपनी अंक प्रदान करने की प्रक्रिया को अधिकाधिक वस्तुनिष्ठ बनाने की सनक तथा बालकों की कोमल बुद्धि को परम अनावश्यक जानकारी के टुकड़ों से भरने की अनबुझ प्यास के कारण एक भारी भरकम 'घनचक्कर की पहेली योजना' बनकर रह गया है।'' उनका मानना था कि आकलन शिक्षण प्रक्रिया का ही एक हिस्सा होना चाहिए।

मैं इस आलेख में आकलन की व्यापक बहस में न जाते हुए दिगन्तर स्कूल में आकलन की समझ, इसके लिए अपनाए गए तरीकों और अनुभव पर बात करूंगी। दिगन्तर का यह अनुभव एक छोटे स्कूल का अनुभव है। अतः यह कहना तो मुश्किल है कि यह मुख्यधारा पर कितना लागू हो सकता है। लेकिन फिर भी मैं यह कहना चाहूंगी कि यदि आकलन को शिक्षण प्रक्रियाओं से अलग करके देखा जाएगा तो इसमें सुधार की गुंजाइश नहीं होगी। आकलन को सीखने-सिखाने की प्रक्रियाओं को बेहतर बनाने तथा सीखने में बच्चों की समस्याओं को चिह्नित कर उनके बेहतर सीखने में मदद करने के लिए देखे जाने पर यह उपयोगी हो सकता है।

दिगन्तर स्कूल

डेविड के शैक्षिक विचारों से प्रभावित होकर 1978 में दिगन्तर स्कूल की शुरुआत हुई। दिगन्तर में स्कूल के माहौल, पढ़ने-पढ़ाने के तौर-तरीकों और आकलन के बारे में कुछ अलग मान्यताएं हैं। यहां लोकतांत्रिक वातावरण में सीखने-सिखाने की प्रक्रियाओं को गढ़ा/पिरोया/बुना जाता है। सीखने में बच्चों की भागीदारी को सुनिश्चित करना शिक्षक अपनी जिम्मेदारी समझता है। इसे सुनिश्चित करने के लिए बच्चे के शैक्षिक स्तर एवं सामाजिक पृष्ठभूमि के मद्देनजर शिक्षण के तरीकों/गतिविधियों का चयन किया जाता है। आमतौर पर कक्षाओं में बंटे स्कूल की बजाय यहां समूह बनाए जाते हैं। समूह बनाते समय यह ध्यान रखा जाता है कि बच्चों की उम्र में अंतर इतना ही हो कि अध्यापक के लिए समूह का संचालन या प्रबंधन समस्या न बने और बच्चे एक-दूसरे के साथ संबंध बनाते हुए काम कर सकें। यह बहुत मामूली-सी चीज लग सकती है लेकिन यह स्कूल को कक्षाओं की सोपानक्रमिकता और एक कक्षा को एक साल के बंधन से मुक्त करता है।

वर्तमान में दिगन्तर स्कूल में कुल 15 समूह हैं जिसमें कक्षा एक से लेकर बारह के समकक्ष तक शिक्षण कार्य होता है। समूहों में एक से अधिक स्तर के बच्चे होते हैं जिनकी उम्र में भी अन्तर हो सकता है। इस तरह एक समूह में बच्चों के सीखने के अलग-अलग स्तर होते हैं, जिसके आधार पर उपसमूह बनाए जाते हैं। ये उपसमूह गतिशील प्रकृति के होते हैं, जिनमें बच्चों की संख्या घटती-बढ़ती रहती है। समूह और फिर उसमें भी उपसमूह बनाने के इस सिद्धान्त के कारण हर बच्चे को अपनी गति से सीखने की आजादी तो मिलती ही है और सभी बच्चों पर एक समय में एक ही विषयवस्तु पढ़ने का दबाव भी नहीं होता (जैसा कि आमतौर पर कक्षाओं में देखा जा सकता है)। इससे बच्चों को एक-दूसरे से सीखने के मौके मिलते हैं। यह सीखना पढ़ने-लिखने तक सीमित न होकर एक-दूसरे के साथ अपेक्षित व्यवहार करने, संवेदनशील होने, बड़ों द्वारा छोटों की मदद करने आदि पहलुओं तक विस्तार लिए होता है। दिगन्तर स्कूल के शिक्षकों का गहरा विश्वास है कि सभी बच्चे सीखने में सक्षम होते हैं व बच्चों की क्षमताएं भिन्न-भिन्न होती हैं। आपको यह सामान्य बातें लग सकती हैं परन्तु यह ऐसी बातें हैं जो उन्हें बच्चों के सीखने में लगने वाले समय के प्रति सहज बनाती हैं व सभी बच्चों को अपनी गति से सीखने की स्वतंत्रता देती हैं। दिगन्तर स्कूल की एक महत्त्वपूर्ण बात यह है कि यहां किसी भी स्तर पर परीक्षाएं नहीं ली जातीं।

सवाल यह उठता है कि आखिर इस स्कूल में परीक्षाएं क्यों नहीं ली जातीं? इसके जवाब पर जाने से पहले यह समझने की कोशिश करते हैं कि आखिर हम परीक्षाओं के जरिए क्या जानना-समझना चाहते हैं और ये बच्चों की समझ के बारे में क्या बताती हैं? आमतौर पर परीक्षाओं में पूछे गए सवाल जिस प्रकृति के होते हैं वे बच्चों में केवल रटने या दूसरे शब्दों में कहें तो याद करने और उसे शब्दशः लिख देने की क्षमता की जांच करते हैं। बच्चे ने प्राप्त जानकारी को अपने संदर्भ में ग्रहण किया या नहीं या क्या वे भविष्य में इस जानकारी का उपयोग नई परिस्थिति में कर पाएंगे आदि का अंदाजा परीक्षाओं के परिणाम के आधार पर नहीं लगाया जा सकता। परीक्षा में प्राप्तांक यह तो बताते हैं कि बच्चे की याद करने की ताकत कितनी अच्छी है परन्तु उसकी सृजनात्मकता और बच्चों के सीखने में आने वाली समस्याओं का आभास तक नहीं करा पाते। इतना ही नहीं बच्चे द्वारा याद की गई सारी सूचनाएं कुछ ही समय बाद

दिमाग के किसी कोने में गायब हो जाती हैं और नए साल में याद करने के लिए कुछ निश्चित नई सूचनाओं का भण्डार लग जाता है। यह सिलसिला साल दर साल चलता रहता है।

परीक्षाएं बच्चों में प्रतिस्पर्धात्मक एवं व्यक्तिरपरक अभिवृत्ति का भी विकास करती हैं। साथ ही बच्चों में अंक न मिलने वाले विषयों (कलाएं आदि) को फिजूल समझने की अभिवृत्ति का विकास होता है। परीक्षाएं ऐसा माहौल रचती हैं जिसमें बच्चे एक-दूसरे के साथ न तो अपने काम को बांटना पसन्द करते हैं और न ही सहयोग। इस तरह की व्यक्तिपरक अभिवृत्ति के भावी समाज पर हानिकारक असर होते हैं।

परीक्षाओं से होने वाली इन तमाम समस्याओं के चलते दिगन्तर ने आकलन के नए तरीके इजाद किए। दिगन्तर का इसमें गहरा विश्वास है कि आकलन कोई अलग-थलग चीज नहीं है अपितु वह शिक्षण प्रक्रिया का ही एक हिस्सा है और इसके लिए अलग से परीक्षा की कोई जरूरत नहीं है। दिगन्तर की मान्यता है कि सीखने-सिखाने की प्रक्रिया में बच्चे को सीखने में आ रही परेशानियों व शिक्षक द्वारा अपनाए गए तरीकों का पुनरावलोकन करने की जरूरत होती है और इसे आकलन की मदद से चिह्नित किया जा सकता है, इसलिए यहां आकलन को शिक्षण के साथ चलने वाली सतत प्रक्रिया के तौर देखा जाता है। आकलन की यह सोच साल के अंत में परीक्षा से किसी तरह का परिणाम थमा देने के साथ संगत नहीं बैठती। अतः दिगन्तर में परीक्षाओं का कोई स्थान नहीं है।

किसी भी जवाबदेह स्कूली व्यवस्था के लिए यह पता लगाना आवश्यक है कि बच्चे कितना सीख रहे हैं। आकलन के संदर्भ में मुख्यतः तीन सवाल उठते हैं (1) शिक्षक को कैसे पता चले कि बच्चे ने कुछ सीखा या नहीं ताकि वह आगे सिखाने की योजना बना सके। (2) यह प्रमाणित कैसे किया जाए कि बच्चे ने कुछ क्षमताएं हासिल कर ली हैं और अब वह आगे बढ़ने के लिए तैयार हैं। (3) स्कूल प्रशासन, संचालक को कैसे पता चले कि बच्चे अपेक्षानुसार सीख रहे हैं? इन सवालों से पहले यह देखते हैं कि दिगन्तर स्कूल में आकलन किस तरह किया जाता है और उसके पीछे किस तरह की मान्यताएं हैं। आलेख के अंतिम हिस्से में इन तीनों सवालों पर चर्चा करेंगे।

दिगन्तर में सीखना-सिखाना

अलग-अलग समूहों में बच्चे और शिक्षक अपने काम में मशगूल हैं। मैं जिस समूह की यहां बात कर रही हूं वह प्राथमिक स्तर का है जिसे 'परी' नाम से बुलाते हैं। आज 30 बच्चे हैं, और तीन उपसमूहों में हिन्दी विषय पर काम चल रहा है। एक समूह कहानी पर, दूसरा वाक्य संरचना, मात्रा एवं शब्दों पर और तीसरा उपसमूह वर्णों एवं ध्वनियों पर काम कर रहा है। शिक्षक आज तीसरे उपसमूह के बच्चों पर ज्यादा ध्यान दे रहा है। यहां शिक्षक बच्चों को शब्द में आने वाली पहली और अंतिम ध्वनि को पहचानने पर सामूहिक काम कर रहा है। बाकी दोनों समूह के बच्चे अपने आप काम कर रहे हैं। बच्चों ने कहानी पढ़ ली है और अब वे कॉपी में अधूरी कहानी को आगे बढ़ा रहे हैं। दो बच्चे आपस में बात करते हुए नई कहानी बना रहे हैं। पहले समूह के कुछ बच्चे बीच-बीच में दूसरे उपसमूह के बच्चों द्वारा बनाए गए वाक्यों को देख रहे हैं व जरूरत पड़ने पर उन्हें सही भी कर रहे हैं। लगभग चालीस मिनट बाद कुछ इसी अंदाज में शिक्षक गणित पर काम शुरू करता है व अन्य विषयों पर भी इसी तरह काम किया जाता है।

बच्चों के जाने के बाद शिक्षक उनके किए गए काम को देखता है और डायरी में आवश्यक नोट्स लेता है। शिक्षक देखता है कि बच्चे ने कहां गलती की, उसे कैसे सुधारा जाए, अवधारणा समझ में आई या नहीं, आदि और इसके आधार पर अगले दिन के काम के बारे में सोचता व योजना बनाता है।

योजना और आकलन

अभी तक ऊपर मैंने जिस काम का वर्णन किया है, उसको शिक्षक निम्न प्रारूप में अपनी डायरी में नोट करता हैः

शिक्षक : रमेश विषय : हिन्दी समूह : परी तिथि : 9 से 11 मार्च, 2015 तक

क्रम	नाम	9/3/2015	10/3/2015	11/3/2015
1.	शबीना	कहानी बनाई पर कल्पना शक्ति पर और काम करने की जरूरत है।	उसी कहानी को दोबारा लिखा। कल से बेहतर थी।	'चिड़िया' कहानी पढ़ी। मन से कहानी लिखी। कुछ रोमांचक पहलुओं को जोड़ा, प्रयास बेहतर था।
2.	प्रिया	कहानी पढ़ी।	कहानी पर कुछ वाक्य लिखे, परन्तु तारतम्यता नहीं। कहानी की लय बनाने के क्रम में इन्हें आगे पीछे किए जाने की गुंजाइश है।	दूसरी कहानी पढ़ी और फिर उसे आगे बढ़ाया, आज कहानी तारतम्य से आगे बढ़ा पाई। कुछ दूसरी कहानियां पढ़ने की जरूरत है।
3.	इमरान	वर्णों और मात्राओं को तो अलग कर रहा है पर कुछ वर्ण पहचान में गलती करता है।	दो मात्राओं की पहचान कर रहा है, इ और ई में कभी–कभी गलती करता है।	किताब में दिए गए वाक्यों को पढ़ा उच्चारण ठीक है।

नोटः इस आलेख में सभी बच्चों के नाम बदल दिए गए हैं।

यह चर्चा आकलन से शुरू हुई और शिक्षण पर आ पहुंची। आप ऊपर गौर करने पर पाएंगे कि दिए गए विवरण में शिक्षण के साथ-साथ आकलन भी शामिल है। शिक्षक याददाश्त एवं विश्लेषण के लिए इसका रिकॉर्ड भी रखता है। बच्चों के काम का यह संक्षिप्त ब्यौरा शिक्षक की आगामी योजना बनाने में मदद करता है।

बच्चे के दैनिक रिकॉर्ड की उपयोगिता महज आगामी दिन की योजना बनाने तक ही सीमित नहीं होती। इसकी मदद से प्रत्येक बच्चे के काम की साप्ताहिक समीक्षा होती है। इसमें शिक्षक समूह के प्रत्येक बच्चे के द्वारा सप्ताह भर में किए गए कामों का जायजा लेता है। इससे शिक्षक को बच्चे के लिए तय किए गए लक्ष्य से आगे बढ़ने या उस पर पुनः काम करने जैसे निर्णय लेने में मदद मिलती है। यह समीक्षा भावी सप्ताह का लक्ष्य तय करती है। कभी-कभी शिक्षक किसी निश्चित अंतराल पर पहले काम में आ चुकी अवधारणाओं/क्षमताओं पर मौखिक या अभ्यास पत्रक की मदद से काम करता है। इस दौरान कभी शिक्षक को बच्चे को सीखने में आ रही दिक्कत की जड़ में कमजोर अवधारणा/क्षमता को ढूंढ़ने तो कभी अवधारणात्मक समझ की जांच में मदद करता है। इस तरह बच्चे का आकलन सतत रूप से चलता रहता है जो कि शिक्षण प्रक्रिया का हिस्सा होता है। बच्चों की प्रगति को शिक्षक आपस में साप्ताहिक शेयरिंग बैठक के माध्यम से एक-दूसरे से साझा करते हैं, फीडबैक देते हैं और बच्चों के सीखने में आने वाली समस्याओं पर मशविरा करते हैं। ये बैठकें बच्चों की प्रगति और स्कूल के लक्ष्यों की दिशा में आगे बढ़ने और शिक्षकों के सतत सीखने का माध्यम होती हैं। इस पूरी प्रक्रिया को हम 'सतत मूल्यांकन' कह सकते हैं।

स्कूल में चलने वाली प्रक्रियाओं में बच्चे न केवल विषयों को समझते हैं बल्कि उनमें कुछ खास तरह के कौशल व मूल्यों का भी विकास होता है। जैसे हाथ से काम करना, सहयोग करना, तार्किक चिंतन, आदि। दिगन्तर में इन सब पहलुओं का भी आकलन किया जाता है जिसे 'समग्र मूल्यांकन' कह सकते हैं जो कि बच्चे से बातचीत करके, व्यवहार का अवलोकन आदि तरीकों से किया जाता है। समग्र आकलन के लिए शिक्षकों द्वारा प्रत्येक छमाही में प्रत्येक बच्चे की एक विवरणात्मक रिपोर्ट लिखी जाती है जिसमें विषयवार प्रगति के साथ-साथ उसके व्यक्तित्व के पहलुओं को भी समाहित किया जाता है। उदाहरण के लिए, रिपोर्ट के दो अंश नीचे दिए गए हैंः

1) खेरूशिमा शाला समय पर आती है। अपने कार्य को जिम्मेदारीपूर्ण तरीके से करती है। सफाई व्यवस्था में अपनी जिम्मेदारी अनुसार जुड़ती है। सभा की प्रत्येक गतिविधि में शामिल होती है। अपनी बात कहते हुए तर्क देती है। दूसरों के प्रति संवेदनशील है, मदद के लिए तत्पर रहती है। विशेष रुचि चित्र बनाने

व अंग्रेजी में कहानी पढ़ने में है। कल्पना व थीम आधारित चित्र बना सकती है व रंग संयोजन का काम भी कर लेती है।

हिन्दी में अपनी बात की लिखित व मौखिक अभिव्यक्ति कर सकती है। करीब डेढ़ से दो पेज का लेखन कार्य कर सकती है। करीब ढाई पेज की कहानी को पढ़कर उसकी लिखित व मौखिक अभिव्यक्ति कर सकती है। करीब चालीस मिनट तक कहानी को एकाग्र होकर सुन सकती है। पत्र, प्रार्थना पत्र, लिंग और विलोम शब्दों पर समझ है।

2) इमरान समय पर शाला आता है लेकिन अभी शाला से कम ही जुड़ पाया है। अपनी जिम्मेदारी को कम ही समझता है, काम में जोड़ना पड़ता है, सभा में कम रुचि है। गतिविधियों में भाग लेने से झिझकता है, चुप रहता है। शांत प्रवृत्ति का है, समूह के बच्चों से कम ही बात करता है। अधिकांश बातों के लिए शिक्षक पर निर्भर रहता है। चित्रों पर पेंसिल फेरकर पूरा कर लेता है और रंग भर लेता है। खुद से चित्र नहीं बना पाता, प्रयास करने पर कुछ खास पैटर्न में ही बनाता है। बालगीत और कविताओं को पीछे-पीछे दोहरान करके गा लेता है, खुद पहल करके कोई कविता नहीं गाता। नाटक में संवाद न बोलने वाले की भूमिका निभा लेता है।

चकमक अप्रैल, 2015 अंक से साभार

हिन्दी की आरम्भिक गतिविधियों पर काम कर रहा है। अपने परिवेश से जुड़ी चीजों के नाम चित्र देखकर बता देता है। शब्दों की प्रथम ध्वनि व ध्वनियों को जोड़कर शब्द बता देता है। समान चीजों के जोड़े बना लेता है। कहानी *सुनकर* समझ लेता है व प्रश्नों के मौखिक जवाब दे देता है। कुछ निश्चित शब्दों की शब्दाकृति को पहचान लेता है।

साल के अंत तक शिक्षक के पास प्रत्येक बच्चे की इस तरह की दो रिपोर्ट्स होती हैं जिनकी मदद से हर बच्चे की समेकित वार्षिक रिपोर्ट तैयार की जाती है।

इस तरह के आकलन के पीछे कुछ सिद्धान्त हैं जिसे मैं सरल अंदाज में रखने की कोशिश करती हूं कि दिगन्तर स्कूल में आकलन तीन मकसद से किया जाता है, 1) बच्चों के सीखने में आने वाली समस्याओं को चिह्नित करने या कहें कि बच्चों के सीखने को बेहतर बनाने, 2) स्कूल के द्वारा तय किए गए लक्ष्यों पर सोचने और 3) बच्चों की प्रगति को अभिभावकों तक संप्रेषित करने के लिए। स्कूल में किसी भी गतिविधि के चयन में बच्चों के स्तर को ध्यान में रखना जरूरी होता है। जब गतिविधियां इस प्रकार की हों कि उनमें बच्चे भाग ले सकें व उन्हें पूरा करने में चुनौती महसूस करें तभी बच्चे उनको करने में रुचि लेते हैं। आगामी योजना को पहले किए गए काम व अर्जित क्षमता को ध्यान में रखते हुए बनाया जाना सीखने-सिखाने की प्रक्रियाओं में बच्चों की भागीदारी को सुनिश्चित करने के प्रयास को इंगित करता है। दूसरा शिक्षक द्वारा प्रत्येक दिन व साप्ताहिक समीक्षा में की गई चर्चाएं शिक्षक को पढ़ाने के तरीकों पर पुनर्विचार करने में मदद करते हैं।

अब आलेख की शुरुआत में रखे गए सवालों के जवाब देखने की कोशिश करते हैं जो बच्चे के आकलन, उसके आगे के स्तर पर बढ़ाने के फैसले और स्कूल प्रशासन की अपेक्षानुसार सीखने से संबंधित हैं। दिगन्तर स्कूल में बच्चों का आकलन दिन प्रतिदिन चलने वाली गतिविधियों के दौरान उसके व्यवहार को देखते हुए, शिक्षक से बातचीत करते हुए होता रहता है जो शिक्षण योजना बनाने में मदद करता है। बच्चे की क्षमता में कितना इजाफा हुआ और कितना होना बाकी है, यह केवल शिक्षक ही बेहतर बता सकता है। चूंकि बच्चे के व्यक्तित्व के सभी आयामों को पेपर-पेंसिल टेस्ट के द्वारा नहीं जांचा जा सकता और आकलन के लिए यह तरीका उपयुक्त भी नहीं है। इसलिए दिगन्तर में

शिक्षकों द्वारा तैयार की गई विवरणात्मक रिपोर्ट्स व दर्ज अन्य डेटा साल के आखिर में उसे प्रत्येक बच्चे द्वारा सीखी गई क्षमताओं की जानकारी देता है।

अब आते हैं तीसरे और महत्त्वपूर्ण सवाल पर प्रमाणपत्र देने (सर्टिफिकेशन) के लिए इसे समझना बहुत ही जरूरी हो जाता है। क्योंकि तर्क यह दिया जा सकता है कि दिगन्तर स्कूल बहुत छोटे पैमाने पर चल रहा है, वहां तो यह संभव हो सकता है परन्तु बड़े स्तर पर शिक्षा व्यवस्था में परीक्षाओं का लिया जाना लाजमी है। इसलिए वर्तमान में विभिन्न राज्यों में स्टेट बोर्ड्स यह काम परीक्षाओं के माध्यम से करते है यानी परीक्षाएं लेते हैं और क्षमताओं/योग्यताओं आदि के सीखने को प्रमाणित करते हैं। परन्तु परीक्षाओं से न केवल बच्चों की ज्ञान व क्षमताओं का पूरी तरह से आकलन नहीं होता है बल्कि उनकी मनःस्थिति पर नकारात्मक प्रभाव भी पड़ते हैं जिनकी बात पहले की जा चुकी है। इसलिए यदि दिगन्तर में अपनाई जाने वाली आकलन प्रक्रिया को बड़े पैमाने पर लागू करने के लिए दो काम किए जाने की जरूरत है (1) शिक्षकों की समझ व कौशलों के विकास हेतु योजनाबद्ध तरीके से काम करते हुए उन पर भरोसा करना (2) अलग-अलग स्तर पर बने तंत्रों को अकादमिक रूप से सशक्त करते हुए जिम्मेदारियों का विकेन्द्रीकरण करना। अर्थात् बहुत सारी बातें हमें स्कूल स्तर पर शिक्षकों पर विश्वास करते हुए छोड़नी होंगी और संकुल या ब्लॉक स्तर के तंत्रों को जिला शिक्षक एवं प्रशिक्षण संस्थानों के माध्यम से सक्रिय करना होगा। ये तंत्र न केवल शिक्षक को अकादमिक मदद मुहैया करवाएंगे अपितु विभिन्न तरह की बैठकों के आयोजन हेतु मंच भी बनेंगे और उनको समय-समय पर फीडबैक भी दे सकेंगे। इस तरह से आकलन की इस प्रक्रिया को हमें जिला स्तर पर केन्द्रित करना होगा जिसमें पेपर-पैंसिल परीक्षा की बजाय बच्चों की क्षमताओं को समग्रता में देखने के अलग-अलग तरीके विकसित किए जा सकेंगे। वे तरीके दिगन्तर स्कूल जैसे हो सकते हैं या फिर प्रत्येक डीआईईटी में परिस्थियों के मुताबिक ऐसे तरीके विकसित किए जा सकते हैं जो बच्चे का समग्रता में आकलन करते हों। इसका अर्थ यह हुआ कि एक साझे फ्रेमवर्क में शिक्षकों को अलग-अलग तरीके से आकलन करने की छूट देनी होगी।

इसलिए ऐसा लगता है कि इन दोनों कामों के करने पर ही राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा (एनसीएफ) 2005 के सुझावों व एनसीईआरटी द्वारा की गई संस्तुतियों की तरफ बढ़ रहे होंगे। ये दस्तावेज कहते हैं कि स्कूलों में होने वाली परीक्षाएं बच्चे की संपूर्ण क्षमताओं को आंकने व उसके द्वारा शिक्षा के उद्देश्यों की दिशा में की जाने वाली प्रगति के बारे में नहीं बताती। अतः परीक्षाओं के तरीकों को बदलकर आकलन को वर्ष भर में चलने वाली शिक्षण प्रक्रिया का हिस्सा बनाया जाना चाहिए। इस दिशा में दिगन्तर में शिक्षण (आकलन) से संबंधित चलाई जाने वाली प्रक्रिया एक मॉडल के रूप में दिखाई देती है जिसे बड़े स्तर पर लागू करने के लिए शिक्षकों की आकलन को लेकर चली आ रही व बन रही समझ को बदलने की जरूरत है। यह तभी संभव है जब दीर्घकालीन योजना बनाते हुए सुविचारित प्रशिक्षण किए जाएं। ◆

संदर्भः

1. रिपोर्ट ऑफ द एज्युकेशन कमीशन, 1964-66
2. शिक्षा बिना बोझ के सीखना, यशपाल समिति रिपोर्ट, 1992
3. शिक्षा विमर्श, अगस्त/सितम्बर 1998, पृ. 9
4. शिक्षक डायरी, दिगन्तर विद्यालय
5. आकलन प्रपत्र, दिगन्तर विद्यालय
6. राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005, अध्याय-3

(शिक्षण व आकलन की प्रक्रिया को समझने में दिगन्तर शिक्षकों से हुई बातचीत से मुझे बहुत मदद मिली। इसके लिए मैं शिक्षकों का आभार व्यक्त करती हूं।)

लेखिका परिचयः पिछले दस वर्षों से सामाजिक क्षेत्र में कार्यरत है। अलग-अलग संस्थाओं के साथ काम करने का अनुभव। वर्तमान में दिगन्तर की अकादमिक संदर्भ इकाई (तरू) में बतौर एसोसिएट फैलो कार्यरत हैं। बच्चों व शिक्षकों के साथ प्रारंभिक शिक्षा के विभिन्न पहलुओं को लेकर कार्य करती हैं। विज्ञान में विशेष रुचि है।